दैनिक जागरण
23 फरवरी, 2006

चर्चा में : किताब

जड़ से टूटने का दर्द

अनुभव आधारित सत्य का वर्णन करती 'चिड़िया फिर नहीं चहकी' की कहानियों में और क्या है खास?

काल्पनिक पात्रों के माध्यम से यथार्थ पेश करते हैं साहित्यकार, जबकि सच को सच्चाई के जरिए लोगों से रू-ब-रू कराते हैं पत्रकार। सच तो यह है कि किसी पत्रकार का 'साहित्य' अनुभव पर अधिक आधारित होता है। शायद इसीलिए वह समाज की सच्चाई सीधे शब्दों में कहने की कोशिश भी करता है। पत्रकार आलोक मेहता के पहले कहानी संग्रह 'चिड़िया फिर नहीं चहकी' में भी अनुभव आधारित सत्य का ही वर्णन किया गया है। पिछले दिनों इस किताब का लोकार्पण इंडिया इंटरनेशनल सेंटर के एनेक्सी हॉल में किया गया। वरिष्ठ राजनेता मोतीलाल वोरा ने कहा, 'यथार्थ के धरातल पर उतरकर लेखक जब सत्य का वास्तविक मूल्यांकन करता है, तो उसकी किताबें पाठक भी पसंद करते हैं।' 'चिड़िया फिर नहीं चहकी' की छोटी-छोटी कहानियां 'ग्लोबलाइजेशन' के युग में आम आदमी की सोच में आए बदलाव और जड़ से टूटने के दर्द की विशिष्ट व्याख्या करती हैं।

रचनाकार आलोक मेहता व वरिष्ठ राजनेता मोतीलाल वोरा

'माइकल को चालान आ गया' में व्यक्ति की खत्म होती जा रही संवेदनशीलता का जिक्र है, वहीं 'आधुनिक मालिक' में आदमी से मशीन की तरह काम लेने की बात संजीदगी के साथ कही गई है।

मुख्य अतिथि, पत्रकार और आलोचक मधुसूदन आनंद ने कहा, 'ये कहानियां मानवीय रिश्ते के भीतरी दबाव से बनी हैं। इन कहानियों में शुद्ध यथार्थ लोगों के सामने आता है।' साहित्यकार कुमुद शर्मा बोलीं, 'पत्रकारिता से प्रभावित शैली में बुनी कहानियों की शिल्प गंध पर मांग बढ़ रही है।' सामयिक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित 96 पृष्ठ की 'चिड़िया फिर नहीं चहकी' का मूल्य 100 रुपये है।

फोटो: भूपेन्द्र सिंह जागरण फीचर